संक्षेपिका

यहाँ पर प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय अहिंसा के विषय को लेकर महात्मा बुद्ध तथा जे० कृष्णमूर्ति की अहिंसा सम्बन्धी अवधारणा का विवेचन है । प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है । वैदिक काल से ही महात्माओं का मानना रहा है कि जगत् में सभी प्राणियों में चैतन्य या आत्मा विद्यमान रहती है । अत: सभी प्राणियों को आपस में दयाभाव व परस्पर प्रेम का भाव रखना चाहिए । हिंसा से अहिंसा की अग्रसर होने की दिशा में यह निश्चय ही आध्यात्मिक कोटि का विचार है । इस प्रकार प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहीत आध्यात्मिक दृष्टि को अहिंसा के एक प्रमुख तत्वमीमांसीय आधार के रूप में देखा जा सकता है । अहिंसा एक परमधर्म है, सम्पूर्ण व्यक्तित्व की अनिवार्य स्थिति, मानवीय दृष्टिकोण एवं दायित्व ही नहीं वरन् अहिंसा धर्म का पालन भी है । अहिंसा केवल हिंसा से मुक्ति नहीं अपितु दुष्प्रवृत्ति एवं विकारों से मुक्ति भी अहिंसा है । अहिंसा एक जीवित व सशक्त मूल्य है । हिंसा, अहिंसा से पूर्णत: स्वतन्त्र और अलग कोई चीज नहीं है, वह अहिंसा का ही एक विकृत्त रूप है । अहिंसा एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर को जन्म देती है तथा सभी मनुष्यों को समान समझने की प्रेरणा देती है । अहिंसा बुराई को अच्छाई से जीतने का सिद्धान्त है । अहिंसा में असंभव को संभव बना देने की

आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान होती है । हिंसा तो अहिंसा का एक विकृत तथा स्थानाच्युत रूप मात्र है ।

प्रस्तुत अध्याय को पाँच भागों में विभाजीत किया गया है । प्रथम अध्याय भूमिका में अहिंसा को परमधर्म बताते हुए इसका वर्णन वैदिक काल से लेकर, जिनमें नास्तिक दर्शन-चार्वाक, बौद्ध एवं जैन तथा आस्तिक दर्शन-सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक एवं मीमांसा-वेदान्त शामिल हैं, समकालीन दर्शन तक जिनमें महात्मा गांधी, आचार्य विनोभा भावे, स्वामी विवेकानन्द तथा जे० कृष्णमूर्ति शामिल है, किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में महात्मा बुद्ध की अहिंसा की अवधारणा का दार्शनिक विवेचन किया गया है । तथागत बुद्ध का हृदय मनुष्यों के प्रति करुणा एवं प्रेम की भावना से परिपूर्ण था । वैदिक युग में यज्ञादि में दी जाने वाली पशु बलियों ने उनके हृदय को द्रवित कर दिया तथा उन्होंने हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाई । बुद्ध का अहिंसा को कहने का ढंग स्वीकारात्मक है । वे कहते हैं - सबसे मैत्री करो, ताकि तुम्हें किसी प्राणी को मारने की आवश्यकता न पड़े । इसके बाद महात्मा बुद्ध ने हिंसा उत्पत्ति के कारणों के अन्तर्गत अविद्या, तृष्णा, इच्छा, लोभ, क्रोध तथा मोह आदि का वर्णन किया है । इसके साथ ही वे हिंसा से निजात पाने के मार्ग के अन्तर्गत वे अष्टाँग मार्ग, पंचशील, शील मार्ग आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन

करते हैं जिनको अपनाकर व्यक्ति अहिंसामय समाज की स्थापना कर सकता है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत हमने जे० कृष्णमूर्ति के अहिंसा विषयक विचारों का दार्शनिक विवेचन करने का प्रयास किया है । जे० कृष्णमूर्ति ने प्राचीन परम्पराओं तथा रूढ़ियों का विरोध करते हुए एक नवीन दार्शनिक विचारधारा का सूत्रपात किया है । जे० कृष्णमूर्ति अहिंसा के बारे में कहते हैं कि साधारण शब्दों में अहिंसा अनिवार्य तथा व्यापक रूप से हिंसा के सभी रूपों का सभी स्तरों पर पूर्ण रूप से निषेध है। जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार हिंसा का अर्थ केवल किसी को कष्ट पहुँचाना या उसकी हत्या करना नहीं है अपितु सामाजिक नैतिकता अथवा अपनी ही विशिष्ट नैतिकता का अनुसरण करना, दूसरों का अनुकरण करना तथा उनके पीछे चलना हिंसा के ही छद्म रूप हैं । इस अध्याय के अन्तर्गत जे० कृष्णमूर्ति के द्वारा बताए गए हिंसा के स्वरूप के अतिरिक्त उसके उत्पत्ति के कारणों जिनमें 'व्यक्तिगत कारण'- क्रोध, अहं, इच्छा ईर्ष्या, द्वेष आदि । 'मनोवैज्ञानिक कारण' जिसमें सम्बन्ध तथा अधिकार आदि तथा 'सामाजिक कारण' अर्थात् प्रतिस्पर्धात्मक सामाजिक परिवेश इत्यादि का विस्तारपूर्वक वर्णन करने का प्रयास किया गया है तथा अन्त में जे० कृष्णमूर्ति द्वारा बताए गए निदान मार्ग 'आत्म अवलोकन' को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत दोनों विचारकों की तुलनात्मक दर्शन को चित्रित करने का प्रयास किया है । इसके अन्तर्गत महात्मा बुद्ध तथा जे० कृष्णमूर्ति के विचारों की समानता तथा असमानता को दर्शाया गया है । समानता के अन्तर्गत दोनों विचारकों का अहिंसा के अर्थ को लेकर दृष्टिकोण लगभग समान ही है । अर्थ के पश्चात् हिंसा उत्पत्ति के कारणों की व्याख्या जिनमें अहं, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ इत्यादि आते हैं, लगभग दोनों विचारकों के दृष्टिकोण से समान हैं । इसके पश्चात् हिंसा से मुक्ति प्राप्ति के मार्ग को लेकर भी दोनों विचारक एकमत प्रतीत होते हैं जिसे, महात्मा बुद्ध 'सम्यक् दृष्टि' तथा जे० कृष्णमूर्ति 'आत्म अवलोकन' नाम देते हैं ।

पंचम अध्याय प्रसांगिकता एवं निष्कर्ष है जिसके अन्तर्गत हमने अहिंसा के विचार की आधुनिक समय में प्रसांगिकता या महत्ता को दर्शाने का प्रयास किया है तथा सम्पूर्ण अध्यायों का निष्कर्ष निकालने का भी प्रयत्न किया है। आधुनिक समय में बढ़ रहे ISIS के आतंकवादी हमले तथा फिदायनी हमले, गाजापट्टी विवाद, जम्मू-कश्मीर विवाद आदि विषयों पर अहिंसा के पथ द्वारा समाधान हो सकता है, यह अहिंसा के प्रबल पक्ष को दर्शाता है ।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में यह दिखाने का प्रयास किया है कि दोनों विचारक व्यक्ति तथा समाज दोनों को ही हिसांमुक्त देखना चाहते हैं । दोनों विचारक हिंसा से निपटने के सुझाव अपनी-अपनी

दृष्टि और समस्या के संदर्भानुसार सुझाते हैं परंतु कृष्णमूर्ति का तरिका जहां मनोवैज्ञानिक है वहीं महात्मा बुद्ध ने व्यवहारिक धरातल से जुड़ कर लोगों तक अपना संदेश पहुंचाया है । अन्त में हमने दिखाया है कि यदि महात्मा बुद्ध का समाज कल्याण का विचार जे॰ कृष्णमूर्ति के दर्शन में मिलाने पर उनके विचारों पर उठा प्रश्न कि व्यक्ति अहिंसा तथा शान्ति प्राप्ति के बाद क्या करें, स्वयं ही हल हो जाएगा । इस प्रकार दोनों विचारकों के अहिंसा के इस विचार समन्वय से पूर्ण समाज में अहिंसा आ सकती है और यही दोनों विचारकों का लक्ष्य है ।